बैगा भाषा का व्याकरण

भादो कर मेहना, 2023

बैगा भाषा का व्याकरण

(बयगा भासा कर बियाकरन)

तारीक 25 भादो कर मेहना, 2023

बैगा कर आरो

तियार करइया

बैगा कर आरो

मदत करइया

बैगा कर आरो

विषय-सूची

पाठ 1: परिचय

पाठ 2: हमारे भाषा को पढ़ने और लिखना

2.1 स्वर

2.2 व्यंजन

पाठ 3: आदमी, समान, जगह और उनका नाम (संज्ञा) प्रकार

3.1 वचन

3.2 लिंग

3.3 कारक

3.4 जोड़ने वाले शब्द

पाठ 4: काम करना (क्रिया)

4.1 पुरुष और वचन

4.2 काल, पक्ष और मन का भाव

4.3 बदलाव

4.4 अकर्मक से सकर्मक के तरफ

पाठ 5: आदमी, समान, जगह के नाम के बदले इस्तेमाल होने वाले शब्द (सर्वनाम)

5.1 पुरुषवाचक सर्वनाम

5.2 प्रश्नवाचक सर्वनाम

5.3 संबंधवाचक सर्वनाम

5.4 निजवाचक सर्वनाम

5.5 अधिकार वाचक सर्वनाम

5.6 संकेतवाचक सर्वनाम

5.7 परस्परवाचक सर्वनाम

पाठ 6: शब्द जो क्रिया के बारे मे जानकारी देते है (क्रिया-विशेषण)

स्थान क्रिया विशेषण

6.1 समय क्रिया विशेषण

6.2 रीति और दूसरा क्रिया विशेषण

पाठ 7: शब्द जो आदमी और समान के बारे मे जानकारी देते है (निर्धारक - विभक्त करने वाले शब्द)

7.1 संख्यासूचक

7.2 संकेतसूचक

7.3 विशेषण

7.4 अधिकारसूचक

पाठ 8: वाक्य

8.1 हम क्रियाविशेषणों की स्थान को बदल सकते हैं:

8.2 हम क्रिया-विशेषण को उपवाक्य में बदल सकते हैं

8.3 हम विवरण के लिए उपवाक्य जोड़ सकते हैं

8.4 हम उपवाक्यों को जोड़ सकते हैं

पाठ 1

परिचय

भाषा का नाम: बैगा

हमारे भाषा का नाम बैगा है। हमारे आस-पास के लोग इस भाषा को जानते है पर दूसरे लोग इस भाषा को आदिवासी भाषा कहते है।

विभाजन: इंडो-आर्यन भाषा या द्रविड़ भाषा परिवार

हमारी भाषा इंड़ो-आर्यन भाषा परिवार समूह मे आअ है। ये भाष हिन्दी और छत्तीसगढ़ी से सम्बंध रखता है।

जन संख्या संबंधी जानकारी

बैगा भाषा बोलने वालो की जनसंख्या लगभग 5 लाख है। हमारे बच्चे बैगा भाषा सिखते है। हमारे बच्चे ज्यादातर घर और अपने लोगो के बीच मे इस भाषा का उपयोग करते है। हमारे बच्चे स्कूलो और बाहरी सम्पर्क मे आने के कारण हिन्दी भी बोलने सिखते है। लेकिन ऐसा नही है कि वो सिर्फ ही सिखते है। हमारी भाषा मध्य भारत के मध्य प्रदेश के शहड़ोल,अनूपपुर,ड़िंड़ोरी,मंड़ला, बालाघाट जिले मे बोलते है। ये भाषा छत्तीसगढ़ के कवर्धा,पेंड्रा जिले मे भी बोला जाता है।

ऐतिहासिक और पारंपरिक जानकारी

हमारी भाषा बोलने वालो के लिये कमाई का माध्यम जंगल मे पाए जाने वाले वस्तु से है। ये लोग जंगल से कोतयार-मोहरस, लकड़ी, बाँस आदि को बेचते है। ये लोग इनका समान बना कर भी बेचते है। आजकल लोग किसानी करने लगे है, लेकिन पुराने लोग और कुछ नाहड़ बैगा आज भी खेती नही करते है। ये लोग अब भी जंगल पर निर्भर है। बैगा लोग अधिकतर जंगल किनारे रहते है। बैगा लोग के पुराने लोग खानाबदोश हुआ करते थ। लेकिन अब ये लोग एक जगह ही रहते है। हमारी संस्कृति का पहचान हमारा करमा नृत्य विशिष्ट है। इनका ये नृत्य को देखने के लिए इन्हे अलग शहरो मे बुलाया जाता है। बैगा लोग का गोदना भी विशिष्ट है जो सिर्फ महिलाए करतीं हैं।

कई/ बहुत भाषाएँ बोलने वाले

हमारे लोग बैगा भाषा को छोड़कर हिन्दी भाषा का उपयोग अधिक करते है। हमारी भाषा मे आदमी बहुभाषी होते है क्योकि ये लोग बाहर जाते है और दूसरी भाषायँ सिखते है। पीढ़ीयों मे भाषाओ को लेकर मतभेद होता है।

भाषा उपयोग का संदर्भ

हमारी भाषा का धार्मिक उपयोग भी है क्योकि ये लोग इस कार्य के लिए सिर्फ बैगा भाषा का उपयोग करते है। गाँव और अपने घर मे बैगा भाषा का इस्तेमाल करते है। लेकिन दुसरे जगह पर हिन्दी बोलते है। लेकिन उनके अपने लोग मिलने से बँगा भाषा ही बोलते है।

व्यवहार्यता कारक- चीजे जो हमारी भाषा विकास मे मदद करते हैं

हमारी भाषा का स्कूल मे उपयोग नही है। और कोई भी साधन नही है। लेकिन बैगा भाषा मे वर्णमाला को तैयार किया गया है। ये एक शुरुवाती प्रयास किया गया है। लिंगो मे को कोई फर्क नही होता है।

बोलियाँ

हमारी भाषा के कई बोलियाँ है। इन बोलियो मे ज्यादा फर्क नही है कुछ फर्क मिलता हे। जब कोई हमारी भाषा बोलता है।

पूर्व मे किए अनुसंधान या कोई प्रकाशित सामाग्री

हमारी भषा मे शब्दकोश बनाने की तैयारी की जा रही है। लेकिन अभी काम कर रहे हे। हमारी भाषा का व्याकरण पर काम कर रहे हैं। हमने बाइबिल अनुवाद किया है पर प्रकाशित नही किए है। हमारी भाषा मे मौखिक पाठ, कहिनियाँ, गीत है। ये सारे चीजे छत्तीसगढ़ के बैगा भाषा मे है। लेकिन हमारे भाषा मे नही है। सिर्फ मौखिक हमारे पुराने लोगो के पास है।

पाठ 2

हमारी भाषा को पढ़ना और लिखना

दुसरी भाषाओ के जैसे हमारे भाषा मे भी लिखने और पढ़ने का तरीका है। पूर्व मे हमारी भाषा एक बोली थी, लेकिन हमारे प्रयास के बाद इस भाषा को हमने लिखित रुप दिया है। हमारी भाषा को भी स्वर और व्यंजन मे विभाजित किया गया है।

2.1 स्वर

बैगा भाषा मे 11 स्वर है। 4 स्वर सामने, 1 स्वर बीच मे और 6 स्वर पीछे मे है।

	सामने	**बीच**	**पीछे**
उँचा	i		u
बीच	ɪ		ʊ
खुला	e	ə	o
नीचा	ɛ		ɔ
			ɑ

हमारे भाषा मे 4 प्रकार के नासिक स्वर होते है। वो चार ये है- ɑ̃, ũ, õ,ə̃। जैसे:- पाँच, उँहा, चोंच, अंगठी

कुछ स्वर को लंबा करके भी लिखा जाता है। ɛː, oː जैसे:- बैगा, कथै,डौका।

2.2 व्यंजन

30 व्यंजन का इस्तेमाल बैगा भाषा मे होता हे।

	दोनो होठ		दाँत	मुर्धा	वत्स्य	पश्चत्स्य	तालु	कोमाल तालु	काकतीय
रुकना	p b p^h b^h		ʈ ɖ $ʈ^h$ $ɖ^h$	ʈ ɖ $ʈ^h$ $ɖ^h$				k g k^h g^h	
नाक से	m				n			ŋ	
संघर्षि		v							
					s				h
						tʃ dʒ $tʃ^h$ $dʒ^h$			

कंपकंपी					r				
उत्छिप्त					ɾ				
अन्तस्थ							j		
पाश्विक अन्तस्थ					l				

पाठ 3

आदमी, समान, जगह और उनका नाम (संज्ञा)

किसी आदमी, जगह, समान या भाव के नाम को ही संज्ञा कहते है।

प्रकार:

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा- जिस किसी शब्द से किसी व्यक्ति, जगह, या समान का पता चलता है।
   जैसे:- बिरसा, महेश, पाथरी बाजार
2. समूहवाचक संज्ञा- जिस शब्द से किसी समान या व्यक्ति के समूह या झुंड़ का पता चलता है।
   जैसे:- बरदी, बरात, सेना
3. भाववाचक संज्ञा- किसी शब्द से किसी व्यक्ति या वस्तु के भाव, धर्म, दोष, गुण, दशा का पता चलता है।
   जैसे:- रिस, बुरा

वचन, लिंग, कारक

हमको पता होना चाहिए कि संज्ञा को गिन सकते है। इन संख्याओ के अंतर को 'वचन' कहते है। ये संज्ञा या तो एक ही होगा, जिसको व्याकरण के भाषा मे एकवचन कहा जाता है। या फिर दो या दो से ज्यादा हो सकता है। इसको बहुवचन कहा जाता है।

संज्ञा को हम लिंग के आधार से भी अलग करते है। अगर कोई संज्ञा पुरुष लिंग का बोध कराता है तो उसको हम पुल्लिंग कहते है। अगर कोई संज्ञा स्त्री होने का बोध कराता है तो उसको स्त्रीलिंग कहते है। अलग हो सकती हैं, आमतौर पर आपको पुरुष और स्त्री संज्ञाओं के बीच का अंतर मिलेगा।

संज्ञा को हम कारक के आधार से भी देख सकते है। कारक चिन्ह का इस्तेमाल करके हम बता सकते है कि किसी वाक्य मे कर्त्ता या कर्म का क्रिया के साथ क्या संबंध है।

3.1 वचन

वचन का मतलब जिससे किसी संज्ञा या सर्वनाम के संख्या का बोध होता है। बैगा भाषा मे दो प्रकार का वचन होता है। एकवचन: ऐसे शब्द जिससे किसी चीज के एक संख्या होने का पता चलता है। जैसे- लड़का, छवा, खेत, कुआ, रूख।

ऐसे शब्द जिससे कोई चीज दो या ज्यादा है पता चलता है, उसको बहुवचन कहते है। दुझन आदमी, नंगतझन लड़की, नंगत भठेला।

बैगा मे एकवचन को बहुवचन बनाने का नियम

1. मानव जाति के मूल शब्द के शुरुवात मे नंगतझन शब्द लगा कर एकवचन को बहुवचन बनाया जाता है। ये तब होता है जब संख्या 10 से ज्यादा हो।

   एकवचन = संख्या+झन+संज्ञा

   बहुवचन= नंगत+झन+संज्ञा

एकवचन		**बहुवचन**	
आदमी/अकझन आदमी	आदमी	नंगतझन आदमी	बहुत आदमी
लड़की/अकझन लड़की	लड़की	नंगतझन लड़की	बहुत लड़की
छवा/अकझन छवा	बच्चा	नंगतझन छवा	बहुत बच्चे
ड़ोकरी/अकझन डोकरी	औरत	नंगतझन ड़ोकरी	बहुत औरत

कभी-कभी एकवचन के लिए संख्या का इस्तेमाल नही किया जाता है। *** ये सिर्फ मानव जाति के लिये होता है।

2. गैर मानव जाति के एकवचन को बहुवचन बनाने के लिये नंगत शब्द को मूल शब्द के शुरु मे लगाया जाता है। बहुवचन के लिए इनकी संख्या 10 से अधिक होनी चाहिए।

   एकवचन= संख्या+ ठन+ संज्ञा

   बहुवचन= नंगत+संज्ञा

एकवचन		**बहुवचन**	
बोकड़ा/अकठन बोकड़ा	बकरा	नंगत बोकड़ा	बहुत बकरा
छेडी/ अकठन	बकरी	नंगत छेडी	बहुत बकरी

कभी-कभी एकवचन के लिए संख्या का इस्तेमाल नही किया जाता है।*

3. मानव जाति जिसकी संख्या 1-10 तक हो तो संख्या से उसके वचन का पता चलता है। संख्या के साथ झन शब्द को मूल शब्द से पहले लगया जाता है।

संख्या+ झन+संज्ञा

एकवचन		**बहुवचन**	
अकझन आदमी	एक आदमी	पांचझन ड़औकी	पाँच औरत
अकझन छवा	एक बच्चा	छयझन छवी	छः बच्चीयाँ
अकझन लड़की	एक लड़की	सातझन आदमी	सात आदमी

4. गैर मानव जाति जिसकी संख्या 1-10 तक हो तो संख्या से उसके वचन का पता होता है। संख्या के साथ ठन शब्द को मूल शब्द से पहले लगया जाता है।

संख्या+ ठन+ संज्ञा

एकवचन		**बहुवचन**	
अकठन बोकड़ा	अक बकरा	चारठन भठेला	चार खरगोश
अकठन छेडी	एक बकरी	सातठन बाग	सात बाघ

नोटः- एकवचन को बहुवचन बनाते समय एक बात याद रखनी है कि बैगा भाषा के मूल शब्द मे को बदलव नही आता है।

3.2 लिंग

संज्ञा के वह रुप से जिससे उसका पुरुष या स्त्री होने का पता चलता है उसको लिंग कहते है। बैगा भाषा मे लिंग दो प्रकार के है, पुल्लिंग और स्त्रीलिंग। कई भाषाओ ऐसे लिंग भी होते है जो इन दोनो मे नही आते है। इनको हम नपुंसक लिंग कहते है। अभी तक हमको बैगा भाषा मे ये नही मिला है।

दो प्रकार के लिंग:

पुल्लिंग- जिससे पता चलता है कि संज्ञा पुरुष है। जैसे- लड़का; छवा; बोकड़ा।

स्त्रीलिंग- जिससे पता चलता है कि संज्ञा स्त्री है। जैसे- लड़की; छवी; छेडी

बैगा भाषा के पुल्लिंग और स्त्रीलिंग बनाने का नियम

1. पुल्लिंग संज्ञा मूल शब्द है। इसको स्त्रीलिंग बनाने के समय मूल शब्द से ‘अ’ को हटा कर ‘ई’ की मात्रा लगाते हैं।

पुल्लिग	**हिन्दी**	**स्त्रीलिंग**	**हिन्दी**

लड़का	लड़का	लड़की	लड़की
छवा	बच्चा	छवी	बच्ची
ड़ोकरा	बुजुर्ग आदमी	ड़ोकरी	बुजुर्ग औरत
डऔका	पती	ड़औकी	पत्नी
घेटा	सुअर	घेटी	मादा सुअर

2. पुल्लिंग मूल शब्द को स्त्रीलिंग बनाने के समय पुरा का पुरा शब्द बदल जाता है।

पुल्लिग	**हिन्दी**	स्त्रीलिंग	**हिन्दी**
बोकड़ा	बकरा	छेडी	बकरी
भाई	भाई	बहिन	बहन
बिलवा	बिल्ला	भेकवा	बिल्ली

3. पुल्लिंग मूल शब्द को स्त्रीलिंग बनाने के समय कई मूल शब्द के अंत मे 'इन' शब्द आता है। पुरा का पुरा शब्द बदल जाता है।

पुल्लिग	**हिन्दी**	स्त्रीलिंग	**हिन्दी**
बयगा	बैगा	बयगिन	महिला बैगा
सियान	बुजुर्ग आदमी	सियानिन	बुजुर्ग औरत

बैगा भाषा मे जंगली जानवरो के लिए भेद नही करते है। लेकिन पालतु जानवरो के लिए लिंग का भेद मिलता है। जैसे: भठेल, हाथी।*

3.3 कारक

एक वाक्य मे संज्ञा का क्या स्थान है। कारक के मदद से हमको पता चलता है कि संज्ञा कर्ता है या कर्म। एक वाक्य मे संज्ञा कर्ता है या कर्म का काम करता है इस बात को बताने के लिए जो चिन्ह का इस्तेमाल करते है उसको कारक चिन्ह कहते है।

संज्ञा या सर्वनाम को साफ करने के लिए जो चिन्ह का इस्तेमाल करते है उसको कारक चिन्ह कहा जा सकता है। इन शब्दो का अपना कोई भी मतलब नही होता है। ये अकेले नही आ सकता। बैगा भाषा मे आने वाले कारक चिन्ह इसप्रकार से है।

हिन्दी	बयगा
कर्ता	
कर्म	ले
करण	म
सम्प्रदान	कर लाइक
अपादान	ले
संबंध	कर
अधिकरण	म

उदाहरण:

कर्ता- काम करने वाला। इसमे कोई भी कारक चिन्ह नही होता है।

बाग कुआ म देखिस। बाग अपन मुन्ड ले थेबदइस।

कर्म- जिस पर काम होता है- 'ले' का इस्तेमाल होता है।

उन बाग ले बयठक म निवता दइन। उन बाग ले मारडइन।

करण- किससे काम किया- 'म' का इस्तेमाल होता है।

उन बाग ले टंगिया म मारिन। ओ गाड़ी म आइस।

अधिकरण ओ घर म हय।

सम्प्रदान- किसके लिए-

तोर भात कर लाइक भठेला भेजेहे। हइ गेंद बेटी कर लाइक आय।

अपादान

जैसे: रुख ले पान गिरिस

संबंध- कर

भठेला बाग कर मांड़ा म गइस। हइ बाग कर ड़ोंगर आय

3.4 जोड़ने वाले शब्द

ये शब्द दो संज्ञा या सर्वनाम को जोड़ते है। ऐसे शब्द संज्ञा या सर्वनाम को पूरे वाक्य से जोड़ते है। ये 'कर' के साथ आते है। इस शब्दो का इस्तेमाल हम लोग अकेले भी कर सकते है। इनका अपना अकेले का भी मतलब होता हे।

हिन्दी	**बैगा**
से पास	कर तीर
के साथ	कर संग
तरफ	छो
ऊपर	उप्पर

उदाहरण

कर संग-

उन बाग <u>कर संग</u> बयठक करिन। भठेला बाग <u>कर संग</u> गुठयाइस।

कर तीर-

भठेला बाग <u>कर तीर</u> म गइस। ओ बाग <u>कर तीर</u> म हय।

छो-

ओ बाग <u>छो</u> गइस बाग मोर <u>छो</u> आइस।

तड़ी

बाग रुख <u>कर</u> <u>तड़ी</u> बयठे हय। ओ टेबल <u>कर</u> <u>तड़ी</u> आय।

उप्पर

ओ टेबल <u>उप्पर</u> आहय। ओ बाठ <u>उप्पर</u> आहय।

पाठ 4

काम करना (क्रिया)

किसी भी वाक्य मे क्रिया का स्थान मुख्य होता है। एक वाक्य मे एक क्रिया, एक अवस्था, एक घटना या एक प्रक्रिया हो सकती है। हर घटना मे एक शुरुआत और अंत बताया जाता है: जैसे:-

रेंग, भग, लिख, बना, गुठया,चढ़, उतर, मार।

किसी वाक्य के क्रिया में बहुत जानकारी मिल जाती है जैसे:- जिस व्यक्ति के बारे में हम बात करते हैं, उस घटना में लगने वाला समय और इसका वर्णन कैसे किया जाता है, और क्या कार्रवाई दूसरों को प्रभावित करेगी।

अब हम इन सभी जानकारी को विस्तार से देखेगे।

पुरुष और वचन

काल, पक्ष, मन का भाव

सहमति

4.1 पुरुष और वचन

हर वाक्य मे क्रिया होते है और ये जानना जरुरी होता है कि काम कौन कर रहा है। हमको ये जानना जरुरी है कि बोलने वाला व्यक्ति है जिसे उत्तम पुरुष कहते है। जिससे बात की गई हो उसे मध्यम पुरुष कहते है या कोई अन्य व्यक्ति जिसके बारे में हम बात करते हैं उसे अन्य पुरुष कहते है। जैसे:- मय, तय, ओ, हम, तुम, उन।

किसी वाक्य मे कर्त्ता का जो वचन है वही वचन क्रिया का भी होता है। अगर किसी भाषा मे मिंग अंतर होता है तो लिंग का भी असर उस क्रिया मे देखता है।

हमारे बैगा भाषा मे लिंग अंतर नही होता है। इसलिए बैगा भाषा मे सिर्फ वचन का ही असर क्रियश पर पड़ता है।

दुसरे भाषाओ के समान हमारे भाषाओ मे आदरसूचक शब्द नही है।

कुछ उदाहरण

a) मय मछड़ी लयहँव।
b) तय मछड़ी लयहेस।
c) ओ मछड़ी लयहे।
d) ओ मछड़ी लयहे।

हमारी भाषा में, पहले व्यक्ति को मुख्य क्रिया में मय और हँव का इस्तेमाल करते है। दूसरे व्यक्ति को तय और -हेस, और तीसरे व्यक्ति को ओ और -हे से बताया जाता है।

ऊपर लिखे उदाहरण, एकवचन मे है लेकिन जब क्रिया बहुवचन हो तो इन वचन को ऐसे लिख सकते है।

a) हम मछडी लयहेन।
b) तुम मछड़ी लयहो।
c) उन मछड़ी लयहें।

बहुवचन के मुख्य और सहायक क्रिया के अंत से व्यक्ति को पहचान सकते हैं: हम और -हेन उत्तम पुरुष को दर्शाते हैं, तुम और -हो मध्यम पुरुष को दर्शाते हैं, और उन और हें अन्य पुरुष को दर्शाते हैं।

निम्नलिखित चार्ट क्रिया के पुरुष और वचन को बताता है:

पुरुष और वचन	**उत्तम पुरुष**	**मध्यम पुरुष**	**अन्य पुरुष**
एकवचन	लयहँव	लयहेस	लयहे
बहुवचन	लयहेन	लयहो	लयहें

4.2 काल, पक्ष और मन का भाव

काल, पक्ष और मन का भाव किसी भी घटना मे जरुरी होता है।

- **काल** का मतलब होता है कि कोई भी घटना कब हुई है। भूतकाल, वर्तमान काल, भविष्य काल।
- **पक्ष** का मतलब होता है कि कोई भी घटना चालू है या खत्म हो चुका है।
- **मन का भाव** का मतलब होता है कि बोलने वाले किस कारण से ऐसा बोला था।

अब हम तीनो काल को समझते है:
काल कोई भी घटना का समय होता है। कोई भी घटना- बीता हुआ कल मे हो सकता है; आज हो सकता है; आने वाले समय मे हो सकता है। काल का पता उस क्रिया के रुप से चलता है। ये तीन प्रकार के होते है।

- वर्तमान काल: वो समय जब कोई घटना बोलने के समय हुई हो।
- भूत काल: वो समय जब कोई घटना बोलने के समय से पहले हुई हो।
- भविष्य काल: वो समय जब कोई घटना बोलने के समय के बाद होने वाली हो।

जैसे:-

a. ओ रुख काटथय।
b. ओ रुख काट दइस।
c. ओ रुख काट दिही।

हमारी भाषा में, इन तीन काल को क्रिया और सहायक के अंत से पहचाना जाता है: वर्तमान काल को क्रिया पर '-थय', 'आय' से बताया जाता है। भूत काल को क्रिया पर '-दइस', 'राहय' से बताया जाता है। सहायक पर, और भविष्य काल को क्रिया पर '-ही' का इस्तेमाल करते है।

काल और पक्ष

भूत काल

निम्नलिखित वाक्य भूतकाल में कार्यों का वर्णन करते हैं:

a. ओ रुख काटेहे।
b. ओ रुख काटत राहय।
c. ओ रुख काटथय।

ऊपर के वाक्य मे काम के खत्म होने के कारण अंतर हुआ है। यहाँ पर बोलने वाला बता रहा है कि ये काम चालू है या खत्म हो गया है। इसी जानकारी को हम **पक्ष** कहते है। यहाँ पक्ष दो प्रकार के है:

पूर्ण पक्ष- जहां घटना समाप्त हो गई है

अपूर्ण पक्ष- जहां घटना जारी रहती है।

ऊपर के वाक्य मे काम खत्म हो गया है इसलिए इसे पूर्ण पक्ष कहते है। दुसरे मे काम चालू है और इसे अपूर्ण पक्ष कहते हैं। और तीसरे मे व्यक्ति एक ही काम करने के लिए बार-बार लौटता है, तो ये आदत पक्ष बन जाता है।

हमारी भाषा में, हम मुख्य क्रिया को नही बदलते है पर कुछ नया शब्द जोड़ते है और कभी-कभी सहायक क्रिया को भी जोड़ते है। ऐसे करके हम क्रिया के काल के तीनो पक्ष को बता सकते है।

यह चार्ट दिखाता है कि हमारी भाषा में क्रिया रूप कैसे दिखते हैं:

क्रिया अर्थ	**मुख्य क्रिया**	**सहायक**	**काल**	**स्थिति**
काट दयहे	काट	दयहे	भूत काल	खत्म
काटत राहय	काट	-त राहय	भूत काल	चालू
काटथय	काट	-थय	भूत काल	आदत

वर्तमान काल

वर्तमान काल में कोई भी काम अभी के समय मे चालू होती है। और कभी-कभी एक ही काम को दुबारा करती है।

a. ओ रुख काटत हय।

b. ओ रुख काटथय।

इस उदाहरण से हम जानते है कि हमारी भाषा के मुख्य क्रिया मे कुछ शब्द जोड़ के और कुछ सहायक क्रिया को जोड़के अपूर्ण और आदत क्रिया मे फर्क कर सकते है। जैसे:-

जरवत ले जादा घला मारना अच्छा बात नयको आय।
हम खुस आन कि तय बयठक म आयहेस।

हमारी भाषा के वर्तमान काल के क्रिया को चार्ट मे लिखे हे:

क्रिया अर्थ	मुख्य क्रिया	सहायक	काल	पक्ष
काटत आय	काट	-त आय	वर्तमान	अपूर्ण
काटथय	काट	-थय	वर्तमान	आदत

भविष्यकाल

भविष्य काल के लिए, क्रिया में भूतकाल और वर्तमान क्रिया रूपों की तुलना में कम अलग होता है:

a) उनले चिंता होइस कि कछु दिन म उन म ले कोही जिन्दा नय बचही।
b) मय डोंगर कर सफो जानवर ले मारडहूँ।
c) जल्दी ओ दिन आही, जब डोंगर म कोही जानबर नय बचही।

हमारी भाषा में, मुख्य क्रिया के अंत मे कुछ शब्द को जोड़कर और कभी-कभी कुछ सहायक क्रिया को जोड़ते है।यहां हम वर्तमान और भूत का विरोध देख सकते हैं:

a) मय सफो जानवर ले मारडहूँ।
b) मय सफो जानवर ले मारदेंव।
c) मय सफो जानवर ले मारडथूँ।

मन का भाव

मन का भाव किसी भी घटनाओं के बारे में बोलने वाले के मन के भाव को बताता है। या फिर किसी क्रिया मे बोलने या लिखने वाले के मन के भाव का पता चलता है उसको ही मन का भाव कहते है।

सांकेतिक मन का भाव – वास्तविक: संकेतसूचक मन का भाव मे बोलने वाला तथ्य को बताता है। ये तथ्य सकारात्मक हो सकते हैं या नकारात्मक भी हो सकता है:

a) ओ रुख काट दइस।
b) ओ रुख नय काटेहे।

इस प्रकार के मन के भाव को भूतकाल या वर्तमानकाल में रखा जा सकता है।

आदेशसूचक मन का भाव - आदेशसूचक मन का भाव मे बोलने वाला या लिखने वाला बदलाव की इच्छा व्यक्त करता है। वो अपनी इच्छा को बता कर बदलाव देखना चाहता है:

a) रुख काट।
b) रुख काट दे।

हमारी भाषा में, हम वाक्य को सीधा बोल के आदेश मन का भाव को प्रगट करते है। हम इसमे कोई भी शब्द न जोड़ते है और न ही हटाते है।

संभावनासूचक मन भाव - इसमे बोलने या लिखने वाला संभावना बताता है। हमारे भाषा मे सिर्फ **'त'** शब्द आता है। दुसरे भाषा के समान यदि...तो और अगर...तो जैसे शब्द नही आते है। जैसे:-

तय रुख काथस त तय लकड़ी लयज सकथस।

इस वाक्य मे यदि या अगर जैसे शब्द नही आये है। लेकिन सिर्फ 'त' शब्द का इस्तेमाल करते है।

4.3 बदलाव

जब किसी क्रिया मे कर्म भी तो ये क्रिया कई सारे विशेषता को प्रगट करते है।

a) सीता मछड़ी लयइस।
b) सीता अपन छवा ले पुस्तक दयहे।
c) अमीना आराम कर रही है.
d) सीता कहिस कि ओ अपन छवा ले पुस्तक दयहे।

निम्नलिखित काम करने वाले शब्द हमें इनको कर्म और बिना क्रम के काम करने वाले शब्दो मे

विभाजित करने के लिए मदद करते है। इनके प्रकार ये है-

(1) काम क्रिया (2) गतिविधि क्रिया (3) कहने की क्रिया

(1) काम क्रिया

इसमे शरीर का एक हिस्सा हिलता है। इसमे अधिकतर कर्म होता है।

राजा चिट्ठी लिखिस। राजा अक घर बनाइस।

राजा फोटु बनाइस।

राजा तास पत्ती खेलिस।

राजा घोड़ा कर सवारी करिस।

राजा गाड़ी चलाइस।

(2) गतिविधि क्रिया

इसमे पुरा शरीर एक स्थान से दुसरे स्थान मे जाता है है। ये हमेशा क्रिया-विशेषण का लेता है। इसका उपयोग तब किया जाता है जब कोई व्यक्ति या वस्तु शरीर को हिलाते हुए अपनी स्थिति बदलता है। जैसे:-

राजा रेंगिस

राजा भगिस

राजा चड़हिस

राजा नाचिस

गतिवधी क्रियाओ मे कर्म नही होता हे। और न वाक्य मे किसी वस्तु की जरुरत पड़ती है। लेकिन कभी-कभी स्थान क्रियाविशेषण होने की संभावना होती है:

एक पहाड़ पर चढ़े

बाड़ पर कूदो

सड़क पर चलो

(3) कहने की क्रिया

शब्दों द्वारा कुछ करने का चित्रण करना; एक मनुष्य भाषा के माध्यम से विषयवस्तु को अभिव्यक्त करता है। कहने की क्रिया: इसमे कुछ बोला जाता है। ये प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष को बताता है। जैसे:-

राजा गुठयाइस

राजा गुठयाइस

राजा चिखरिस

राजा पूछिस

राजा पूछताछ करिस

राजा बेहस बरिस

कहने की क्रियाएं सकर्मक होती हैं, लेकिन ज्यादातर मामलों में उन्हें जिस तत्व की आवश्यकता होती है वह एक पूरा वाक्य होता है:

जानवरों ने कहा कि कोई भी जीवित नहीं बचेगा।

जानवरों के नेता ने कहा कि वे शेर को राजा पाकर बहुत खुश हैं।

(4) मुख्य क्रिया

ये ऐसे क्रियाएँ हैं जो किसी प्राणी के अवस्था का संकेत देती हैं:

जंगल में एक शेर रहता था।

शेर क्रोधित हो गया।

सभी जानवर खुश हो गये।

आमतौर पर, अस्तित्व की क्रियाओं का उपयोग तब किया जाता है जब किसी किरदार को कहानी में लाया जाता है, और अन्य भावनात्मक स्थितियों का वर्णन करते हैं।

4.4 अकर्मक से सकर्मक की ओर

कई क्रियाओं को अकर्मक से सकर्मक में बदला जा सकता है:

सीख > सिखाबे

देख > देखा

काट > काट

हमारी भाषा में, हम इन सारी क्रियाओं का इस्तेमाल करते है। हमारी भाषा मे हम कभी-कभी अंत मे कुछ शब्द जोड़कर क्इया मे बदलाव को देखाते है।

पाठ 5

आदमी, समान, जगह और उनके नाम के बदले इस्तेमाल होने वाले शब्द (सर्वनाम)

संज्ञा के स्थान पर जिन शब्द का इस्तेमाल होता है उसको सर्वनाम कहते है। हम इसमे संज्ञा का बार-बार उपयोग नही करते है।

1. **उत्तम पुरुष -** इसमें लिखने वाला या बोलने वाला आता है। मय, मोय/मोले, हम, हमले।
2. **मध्यम पुरुष -** इसमे पढ़ने वाला या सुनने वाला आता है। तय, तुम, तुमहर।
3. **अन्य पुरुष -** इसमे लिखने वाला, बोलने वाला, सुनने वाला, पढ़ने वाला को छोड़कर सब आते है। ओ, उन, हइ, इन, ओ, उन।

5.1 पुरुषवाचक सर्वनाम

जब बोलने वाला, सुनने वाला या जिसके बारे मे बात हो रहा हो। इसका पता चले उस सर्वनाम को पुरुषवाचक कहते है। यह सर्वनाम इंसानो के लिए इस्तेमाल होता है।

हमारे भाषा मे लिंग मे अंतर नही है। जीवित के लिए दूरी और नजदीक का अंतर नही होता है। लिंग का फर्क क्रिया से भी नही होता है। लेकिन वचन का बोध हम क्रिया से करते है।

पुरुषवाचक सर्वनाम दो किस्म के होते है;

1. काम करने वाले के आधार पर

	उत्तम पुरुष	मध्यम पुरुष	अन्य पुरुष
एकवचन	मय	तय	ओ
बहुवचन	हम	तुम	उन

उदाहरण:

मय काम करथूँ।	हम काम करथन।
तय काम करथस।	तुम काम करथो
ओ काम करथय।	उन काम करथँय।
हइ मोर समान आय।	हइ नंगत समान मोर आय।

2. कर्म के आधार पर

सर्वनाम के साथ भी 'ले' शब्द आया है। प्रथम पुरुष और मध्यम पुरुष के लिए दो शब्द है। लेकिन ये जगह का फर्क हो सकता है। ये फर्क हिन्दी भाषा और छत्तीसगढ़ी से मिलता है।

	प्रथम	मध्यम	उत्तम
एकवचन	मोय/मोले	तोय/तोले	ओले
बहुवचन	हमले	तुमले/तुमहे	उनले

*प्रथम पुरुष एकवचन मे 'मोय/मोले' और मध्यम पुरुष एक वचन मे 'तोय' और 'तोले' बोला जाता है। बैगा भाषा के पुराने लोग जो अलग भाषाओ के संपर्क मे ज्यादा नही आये है, वो ऐसे बोलते है। लेकिन 'मोले' और 'तोले' भी बोलते है लेकिन ये छत्तीसगढ़ी के 'मोला' और 'तोला' से मिलता है। संभव है कि वहाँ का कुछ सार हुआ होगा। गाँवो मे जा के जाचने की जरुरत है।

उदाहरण:

राम मोय मारिस। राम हमले भेजेहेस।

राम तोय मारेंव राम तुमले मारेंव

राम ओले मारेंव राम उनले मारेन।

5.2 प्रश्नवाचक सर्वनाम

जब हम किसी से सवाल करते है। जैसे:

काइन, काइनख, कब, कहा, कसे

5.3 संबंधवाचक सर्वनाम

जब किसी वस्तु या इसान के संबंध को बताना होता है। जैसे:

जोन-तोन; जोखर-तोखर;

इस सर्वनाम का सूची नही मिला है। गाँव मे जा के बात करना पड़ेगा।

5.4 निजवाचक सर्वनाम

जब अपने बारे मे बताने के लिए सर्वनाम का इस्तेमाल करते है। जैसे:

मय, महीच, खुद, खुदेच, अपन

5.5 अधिकार वाचक सर्वनाम

इसको संज्ञा के साथ इस्तेमाल करते है। कभी कभी अकेले भी आता हे। लेकिन ये हमारे भाषा मे नही है। दुसरी भाषाओ मे जब संज्ञा के साथ आता है तो अलग है और अकेले होने पर दुसरा शब्द इस्तेमाल होता है।

	प्रथम	**मध्यम**	**उत्तम**
एकवचन	मोर	तोर	ओखर
बहुवचन	हमर	तुमहर	उँखर

उदाहरण:

हइ मोर कलम आय। इन हमर कुकुर आय।

हइ/ओ तोर कलम आय। उन तुमहर कुकर आय।

ओ ओखर कलम आय। इन उँखर कुकर आय।

5.6 संकेतवाचक सर्वनाम

ये सर्वनाम दूर और नजदीक के वस्तु या इंसान बताने के लिए होता हे।

संकेतवाचक सर्वनाम का मतलब होता है कि किसी चीज या इंसान को संकेत करके बताना। इस सर्वनाम को लेकर कई बार धोखा होता है। संकतवाचक सर्वनाम और संकेतवाचक विशेषण। सं.सर्वनाम मे किसी संज्ञा का जरुरत नही पड़ता फिर भी ये सारा अर्थ को स्पष्ट करता है। लेकिन सं.विशेषण के लिए हमेशा एक संज्ञा की जरुरत पड़ती है।

उदाहरण:

नीचे लिखे उदाहरण मे सं. सर्वनाम का उपयोग एक संज्ञा के साथ हुआ है।

हइ आमा खट्टा आय। ओ आमा खट्टा आय।

इन आमा खट्टा आय। उन आमा खट्टा आय।

नीचे लिखे उदाहरण मे सं.सर्वनाम अकेले आया है। इसमे कोई भी संज्ञा नही आता है। ऐसे सर्वनाम का अपना कोई भी अर्थ नही होता हे।

हइ मोर घर आय। ओ मोर घर आय।
इन मोर घर आँय। उन मोर घर आय।

एकवचन	हइ	ओ
बहुवचन	इन	उन

***कभी-कभी ओ का भी इस्तेमाल किया जाता है। किसी जगह पर। इसको गाँवो मे जाकर जाँचना है।

उदाहरण:

हइ मोर समान आय। हइ सफो समान मोर आय।

हउ मोर समान आय। उन मोर समान आय।

5.7 परस्परवाचक सर्वनाम

दो लोग के बीच का संबंधको बताता है। जैसे:

अक-दुसरले -- एक-दुसरे; अपने अपन -- आपस

पाठ 6

शब्द जो क्रिया के बारे मे जानकारी देते है (क्रिया-विशेषण)

क्रिया – विशेषण घटना का समय, घटना का स्थान या घटना की रीति के इस्तेमाल करके क्रिया को और विशेष कर देता है।

- **समय क्रिया-विशेषण**- जो क्रिया के समय की विशेषता बताता है। जैसे:- कल, आज, अक दिन, जल्दी।
- **स्थान क्रिया विशेषण,** जो क्रिया के स्थान की विशेषता बताता है। जैसे:- सहर म, बजार छो/ले, घर म, छानी उप्पर
- किसी वाक्य से पता चले की क्रिया कैसे हुआ है, तब **रीति क्रिया विशेषण** का बात करते है। जैसे:- रिसाय के, चुप्पे, समहर के आदि
- कुछ क्रिया विशेषण किसी विशेषण या क्रिया- विशेषण को और व्याख्या करता है। जैसे:- बेझा लंबा, बेझा रिस, बेझा ताकत से

हमारी भाषा मे क्रिया विशेषण (एक शब्द का) या क्रिया विशेषण वाक्यांश (एक से अधिक शब्द) होते है। क्रिया विशेषण वाक्यांश मे एक संज्ञा और एक परसर्ग होना चाहिए।

दूर

तीर

कुआ छो

रुख तडी

ओ दिन ले

अपन पुरो बल ले

6.1 स्थान क्रिया विशेषण

किसी स्थान के वर्णन के लिए स्थान क्रिया विशेषण का इस्तेमाल होता है। ये ज्यादातर वाक्यांश का रुप लेता है।

कुआ छो डोंगर म

कुआ ले	बयठक म
बाग कर गुफा म	पथरा म

लेकिन कभी-कभी एक शब्द का स्थान क्रिया विशेषण भी हो सकता है। जैसे-

उछो	इँहा
इछो	उँहा
दूर	तड़ी
तीर	

इस पाठ मे, स्थान क्रिया विशेषण क्रिया के तुरंत पहले आता है।

अक दिन, डोंगर कर सफो जानवर अक बडे रुख तड़ी एखट्टे होइन

ओ दिन के बाद ले रोजदिन अकठन जानवर बाग कर तीर ओखर भात बने कर लाइक भेजे लागिन।

अकबार, बाग कर गुफा म जाय कर पारी अक भठेला कर राहय।

लेकिन कहीं-कहीं पर स्थान क्रिया विशेषण क्रिया विशेषण के पहले ना आकर कर्म के पहले आता है। जैसे:-

मोय ओ जागहा म लयज, जहा तय ओले देक राहस।

हमारी भाषा मे स्थान क्रिया-विशेषण अधिकतर क्रिया के पहले आता है। कभी-कभी स्थान क्रिया-विशेषण कर्म के पहले भी आता है। लेकिन इस परिस्थिती मे कर्त्ता नही होता है। कुछ जगह पर कर्त्ता के पहले भी आता है।

6.2 समय क्रिया विशेषण

समय क्रिया विशेषण भी कभी-कभी एक शब्द का हो सकता है या कभी- कभी वाक्यांश भी हो सकता है।

कल	अक दिन
कल	दुसर दिन

देर	ओ रात
जल्दी	पेहली
अकबार	कुछ दिन

समय क्रिया विशेषण कर्त्ता के पहले आता है।

ओ दिन कर बाद ले रोजदिन अकठन जानवर बाग कर तीर ओखर भात बने कर लाइक भेजे लागिन।

रोजदिन कोहि अकठन जानवर कर पारी राहय।

अकबार, बाग कर गुफा म जाय कर पारी अक भठेला कर राहय।

कभी-कभी समय क्रिया विशेषण कर्त्ता के बाद आता है।

फेर ए धियान राहखहो, जानवर मोर तीर म समय म पोहोच जाय।

अगर कोई कर्म है तो क्रिया विशेषण कर्म के पहले आता है:

राजा, हम पेहली ले अपन बीच म चरचा करडेहेन अउर अक उपाय खोजडहेन।

हमारी भाषा मे समय क्रिया विशेषण कर्त्ता के पहले आता है। कुछ जगह पर ये कर्त्ता के बाद भी आया है।

6.3 रीति और दूसरा क्रिया विशेषण

ज्यादातर रीति क्रिया विशेषण एक शब्द का होता है:

जैसे:- जल्दी, धीर, धियान से, तेज, रिस, खूस, इक्छा

लेकिन फिर भी कई सारे क्रिया विशेषण वाक्यांश होते है।

जैसे:- ताकत से, झिझक से, धियान से, रिसाय के, बेझा रिसाय के

रीति क्रिया विशेषण सामान्यत: क्रिया के पहले आता है:

अंग्रेज़ी से हिन्दी में अनुवादित। - www.onlinedoctranslator.com

बाग बेझा रिसाय के चिखरिस

अउर ओखर बाद उन सफो खुसी से राहन लागिन

हमारी भाषा मे रीति क्रिया विशेषण क्रिया के पहले आता है। दुसरा स्थान नही मिला है। दूसरे कहानियो मे शायद मिल सकता है।

हमारी भाषा मे, कुछ अन्य क्रिया विशेषण भी होते है।

पाठ 7

शब्द जो आदमी और समान के बारे मे जानकारी देते है (निर्धारक - विभक्त करने वाले शब्द)

कोई भी शब्द जो संज्ञा के बारे में अधिक जानकारी देता है वह निर्धारक होता है। सिर्फ संज्ञा से कोई भी जानकारी असीमित होता है। जैसे ही विशेषण का इस्तेमाल करते है तो हम संज्ञा को सीमित कर देते है।

निर्धारक के प्रकार:

- संख्यासूचक
- संकेतसूचक
- विशेषण
- अधिकारवाचक

निर्धारक हमेशा संज्ञा के साथ सहमत होना चाहिए।

जैसे:- दुठन घर (अंक)

ओ घर(संकेत)

सुन्दर घर (विशेषण)

मोर घर(अधिकारवाचक)

7.1 संख्यासूचक

ऐसे शब्द जो किसी संज्ञा का संख्या बताते है उसको संख्यासूचक। ये सूचक कभी गिनती के रुप मे या फिर कभी क्रम के लिए भी इस्तेमाल होता है।

हमारे भाषा के संख्यासूचक निर्धारक ये है: कुछ, नंगत, बेझा, कोही, गिनती (अक, दु, तीन), क्रम (पेहली, दुसर), रोज, जरासिन।

जैसे:- अकठन घर

दुठन घर

पांचठन घर

पेहली घर

दुसर घर

संख्यासूचक निर्धारकों मे एक अनिश्चित संख्यासूचक भी होते है। इसका मतलब होता है कि संख्या की जानकारी निश्चित नही है। जैसे: कछु, नंगत/रदा, कोही। इनको भी अपने संज्ञा के साथ सहमत होना चाहिए।

जैसे:- कछु घर

नंगत घर

कोही घर

कभी-कभी संख्यासूचको का इस्तेमाल सर्वनाम के जैसे भी किया जा सकता है:

इन दुनो आईन　　पेहली दुझन आइन

कोही आइन　　कछु आदमी आइन

7.2 संकेतसूचक

ऐसे शब्द जो संज्ञाओं की पहचान कराते हैं और साथ मे बोलने वाले से उसकी दूरी भी बताते है। ऐसे शब्द को संकेतसूचक निर्धारक कहते है। इसमे हमेशा संज्ञा का इस्तेमाल होता है। ये ही दूर और पास को बताता है। हमारे भाषा मे इस्तेमाल होने वाले संकेतसूचक ये है। हइ, ओ, इन, उन।

जैसे:- हइ घर　　ओ घर

हमारे भाषा मे हमेशा संज्ञा के पहले आता है। हमारे भाषा मे संकेतवाचक अधिकतर वाक्य के शुरुआत मे आता है।

जैसे:- दुसर जानवर, दुसर बाग, अकठन भठेला, अकठन बाग, अक दिन।

संकेतसूचक निर्धारक का इस्तेमाल:

ये शब्द किसी वक्ता और समान के बीच की दूरी को बताता है:

जैसे:- हइ घर इँहा आय।

सर्वनाम के रूप में भी किया जा सकता है। ऐसे समय मे ये संज्ञा के स्थान पर आता है:

जैसे:- हइ वारे　　ओ वारे

7.3 विशेषण

विशेषण मुख्य संज्ञा के बारे में जानकारी देता है। या ये कह सकते है कि ये शब्द संज्ञा के विशेषता बताता है। ये ऐसे शब्द होते है जो किसी संज्ञा या सर्वनाम के गुण-दोष या विशेषता बताते है। हमारी भाषा मे ये संज्ञा के पहले आता है।

हमारे भाषा मे उपयोग मे आने वाले कुछ विशेषण ये हैं- मुच आदमी, नानस आदमी, मोठ आदमी, पातड़ आदमी, कड़िया आदमी, पंडरा आदमी, घमंडी आदमी, ढोंगिया आदमी, चलाक आदमी, अक्कलवारे

आदमी, लफोड़ आदमी, कुहडा आदमी, लदरा आदमी, अच्छा आदमी, खराब आदमी, हरियर रुख, सूक्खा रुख, आमठ, मीठ, खर्रो, कडु, कडु, लाल माटी, जुन्ना, नवा, दूरिहा, तीर, हड़दू, सड़हा, मेहेंगा, पनिहर।

जैसेः- मुच आदमी — मोठ गोरु

अच्छा/सुघ्घड लड़का — अच्छा भात

सुन्दर फुल — चलाक आदमी

7.4 अधिकारसूचक

अधिकारसूचक निर्धारक ऐसे शब्द होते है जो किसी भी वस्तु पर स्वामित्व का संकेत देते हैं। जैसेः-

जैसेः-	मोर घर	तोर घर	ओखर घर
	मोर डउकी	ओखर डउका	तोर काकी
	तोर काका	तोर जागाह	मोर काम

वडार (महाराष्ट्र) जैसे भाषाओ मे अपने पारिवारिक या घनिष्ठ संबंध को बताने के लिए अलग अधिकारसूचक निर्धारक का इस्तेमाल होता है। लेकिन हमारे भाषा मे ऐसे अलग से अधिकारसूचक निर्धारक नही है।

पाठ 8

वाक्य और अधिक जानकारी

हम अपनी भाषा मे किसी भी पाठ को बोल सकते है या फिर लिख कर भी भी अपनी भावनाओ व्यक्त कर सकते है। जब हम पाठ को बोलते है तब हम कभी भी उसके क्रम के बारे मे नही सोचते है। जब हम उसी पाठ को लिखना चाहते है तो हमे कई सारी बातो पर ध्यान देना पड़ता है।

जैसे: *अक दिन कर बात आय घन्ना डोंगर म अकठन बाग राहत राहय ओ अपन भूक भगवाएले डोंगर कर जानवर ले मार देत राहय बाग कर हइ चाल डोंगर कर जानवर कर लाइक चिन्ता कर कारन बन गइस उनले चिंता राहय कि कछु दिन म ओतक म कोहि जिन्दा नय बचहीं उन हइ समस्या उप्पर आपस म चरचा करिन अउर बाग कर संग बयठक करिन उन बाग कर संग सलहा करले सोचिन हइ समस्या ले खतम करेले देखत रहिन*

इस कहानी मे हमको सिर्फ शब्द ही नजर आ रहा है लेकिन कहानी का जो भावना है वो इसमे नही मिल पा रहा है। हम इस कहानी को पढ़ने मे परेशानी भी हो रही है। जब इसी कहानी को हम अनुच्छेद, वाक्य, वाक्यांश मे विभाजित कर देते है तो पढ़ने से इसका मतलब समझ आने लगता है।

जैसे:- *अक दिन कर बात आय घन्ना डोंगर म अकठन बाग राहत राहय। ओ अपन भूक भगवाएले डोंगर कर जानवर ले मार देत राहय। बाग कर हइ चाल डोंगर कर जानवर कर लाइक चिन्ता कर कारन बन गइस। उनले चिंता राहय। कि कछु दिन म ओतक म कोहि जिन्दा नय बचहीं।*

उन हइ समस्या उप्पर आपस म चरचा करिन। अउर बाग कर संग बयठक करिन। उन बाग कर संग सलहा करले सोचिन। हइ समस्या ले खतम करेले देखत रहिन।

अब इस कहानी को हमने अलग अलग अनुच्छेद, वाक्य, वाक्यांश मे विभाजित कर दिया है। अब इस कहानी को पढ़ने से इसके भावनाओ को भी समझ सकते है।

एक पाठ या लंबे कहानियों को अक्सर कई अनुच्छेदो मे बाँटा जाता है। ये अनुच्छेद कई वाक्यो से मिल कर बने होते है। ये वाक्य भी वाक्यांश मे विभाजित होते है। ये वाक्यांश शब्दो मे विभाजित होते है।

हम इन बात को ऐसे भी कह सकते है।

शब्द-> वाक्यांश->वाक्य->अनुच्छेद->पाठ/कहानी

जब हम किसी वाक्य को बनाते है तो हमे हमेशा कुछ सवालो को उन वाक्यो मे खोजने की कोशिश करनी चाहिए। वाक्यांशो के लिए कुछ सवाल हो सकते है। कुछ सवाल निम्न प्रकार के हो सकते हैं:

कर्ता – कौन काम कर रहा है?

क्रिया – क्या काम रहा है?

कर्म – क्रिया किसके ऊपर हो रहा है?

क्रिया विशेषण – क्रिया किस प्रकार की जा रही है?

समय – काम कब हो रहा है?

स्थानीय – काम कहाँ हो रहा है

रीति – काम कैसे हो रहा है।

अब हमे इन सवालो से वाक्य मे कई उत्तर मिल जाएँगे। लेकिन ये भी एक वाक्य मे सही क्रम का पालन करते है।

उदाहरण के लिए, कर्ता के बाद कर्म और क्रिया आता है। क्रिया विशेषण का भी वाक्य मे अपना एक स्थान होता है। रीति क्रिया विशेषण क्रिया के साथ आते हैं। समय क्रिया विशेषण कर्त्ता से पहले आते हैं, और स्थान क्रिया विशेषण क्रिया से पहले आते हैं।

जैसे:-

उस दिन से,	*प्रतिदिन*	*एक जानवर*	*शेर के पास*	*भेजा जाता था।*
समय	समय	विषय	स्थान	क्रिया

शेर ने	*अपना सिर*	*चट्टानों पर*	*मारा।*
कर्ता	वस्तु	स्थान	क्रिया

हमारे भाषा मे इनका एक क्रम होता है:

समय	विषय	वस्तु	जगह	रीति	क्रिया

8.1 हम क्रियाविशेषणों की स्थान को बदल सकते हैं

एक वाक्य मे क्रिया विशेषण एक क्रम मे होता है। कभी-कभी इस क्रम मे बदलाव भी आता है

समय क्रियाविशेषण क्रिया से पहले जा सकता है

विषय	**स्थान क्रिया विशेषण**	समय	क्रिया

जैसे:-

a) हम रोजदिन तोर मांडा म अक जानवर भेज सकथन।

विषय / समय / स्थान/ वस्तु / क्रिया

स्थान क्रियाविशेषण विषय से पहले जा सकता है

स्थान क्रिया विशेषण	विषय	समय	क्रिया

स्थान क्रियाविशेषण विषय से पहले प्रारंभिक स्थिति मे आ जाता है

जैसे:-

b) डोंगर म, अक बाग राहय।

कहानी की शुरुआत में, नया प्रतिभागी (शेर) अंतिम स्थान लेता है, जबकि स्थान क्रिया विशेषण 'जंगल में' को शुरुआत में प्रस्तुत किया जाता है।

8.2 हम क्रिया-विशेषण को उपवाक्य में बदल सकते हैं

कभी-कभी क्रियाविशेषण को एक उपवाक्य मे भी बदल सकते है

a) कल राजा सहर म गइस।
b) कोही से मिले ले, राजा सहर म गइस।

यहाँ पर पहला वाक्य का एक-शब्द क्रियाविशेषण, दुसरे मे क्रियाविशेषण उपवाक्य में बदल गया है।

स्थान क्रिया विशेषण को उपवाक्य में भी बदला जा सकता है:

c) राजा उँहा गइस।
d) राजा उँहा गइस जहाँ उन आमा बेचत रहिन।

उसी स्थान में रहते हुए क्रियाविशेषण शब्द क्रियाविशेषण उपवाक्य में बदल जाता है।

8.3 हम विवरण के लिए उपवाक्य जोड़ सकते हैं

हमारी भाषा मे हम संज्ञा का वर्णन करने के लिए एक उपवाक्य भी जोड़ सकते है।

a) भठेला अक बात सोचिस।
b) भठेला अक बात सोचिस जोखर से ओखर जियान बचजही।

यहाँ पर पहले वाक्य मे भठेला का बात साफ नही है लेकिन दुसरे वाक्य मे एक उपवाक्य जोड़ने से वो बात पुरा हो गया।

***कुछ और उदाहरण दे सकते है**

इन विभिन्न उपवाक्यों को सापेक्ष उपवाक्य कहा जाता है।

हम उपवाक्यों को जोड़ सकते हैं

हम दो उपवाक्यों को 'फेर' या 'अउर' जैसे शब्दों से जोड़ सकते हैं। ऐसे शब्दो को ‘जोड़ने वाले शब्द’ कहते है। जैसे:-

a) ओ जाय ले तियार नयको राहय, फेर दूसर जानवर ओले जाय ले कहिन।
b) हम पेहली ले आपस म हइ समस्या उप्पर चरचा करडहेन अउर ओखर उपाय खोहडहेन।

हम ‘जोड़ने वाले शब्द’ के तीन समूहों के बीच अंतर कर सकते हैं:

सामान्य जोड़ने वाले शब्द जैसे 'अउर', 'त', 'घला'

तार्किक जोड़ने वाले शब्द जैसे 'कउकि, ’फेर भी’

अस्थायी जोड़ने वाले शब्द जैसे ‘ओही बीच, बाद में, पहले'

8.4 सामान्य जोड़ने वाले शब्द

वाक्यों को बिना अर्थ वाले शब्दो से जोड़ा जा सकता है:

a) हम पेहली ले आपस म हइ समस्या उप्पर चरचा करडहेन अउर ओखर उपाय खोहडहेन।

लेकिन कभी-कभी, वाक्य बिना किसी ‘जोड़ने वाले शब्द’ के एक-दूसरे के निकट स्थित होते हैं:

b) शेर चिल्लाया, बोला..
c) खरगोश ने हाथ जोड़कर कहा..

हमारी भाषा मे सामान्य ‘जोड़ने वाले शब्द’ मिलते है जिसका अपने मे कुछ अर्थ नही होता है। ***हमारी भाषा मे ऐसे कुछ वाक्य नही मिला जिसमे कोई भी जोड़ने वाले शब्द नही है।***

कभी-कभी एक ऐसा सामान्य ‘जोड़ने वाला शब्द’ मिलता है जिसके तुरंत बाद एक उपवाक्य आता है।

जैसे:-

a) उनले चिंता राहय कि कछु दिन म उन म ले कोही जिन्दा नय बचही।
b) हम बेझा खुस आन कि तय बयठक म आयहेस।

जब प्रत्यक्ष बात अप्रत्यक्ष बात में बदल जाता है, तो हम या तो दोनों खंडों को एक-दूसरे के बगल में रखना चुन सकते हैं, या संयोजन सम्मिलित कर सकते हैं।

a) उन बाग ले बयठुक म आय ले कहिन।
b) उन बाग ले कहिन क ओले बयठुक म आय चही।

8.5 तार्किक संयोजन

जब कोई घटना या क्रिया एक दूसरे से तार्किक तरीके से जुड़ी होती हैं, तो तार्किक ‘जोड़ने वाले शब्द’ का इस्तेमाल करते है। जैसे:-

ओ जाय ले तियार नयको राहय, फेर दूसर जानवर ओले जाय ले कहिन।

हमारी भाषा मे उपयोग होने वाले कुछ तार्किक जोड़ने वाले शब्द ये हो सकते है:

कारण और प्रभाव: कउकि

विरोधाभास: फेर

उद्देश्य: ताकि

स्थिति: अकखर...तो

8.6 अस्थायी संयोजन

जब दो घटनाएँ एक-दूसरे का आगे पीछे हो या एक ही समय में घटित हो:

a) बाग कुआ मे देखिस अउर अपन चेहेरा ले देखिस।

b) कुआ म देखत समय बाग ले ओखरेच चेहेरा दिख गय।

हमारे भाषा मे ये घटनाएँ आगे-पीछे भी होते है या कभी-कभी एक समय मे ही होते है। ऐसे घटनाओ को जोड़ने के लिए हम कुछ जोड़ने वाले शब्दो का इस्तेमाल करते है।

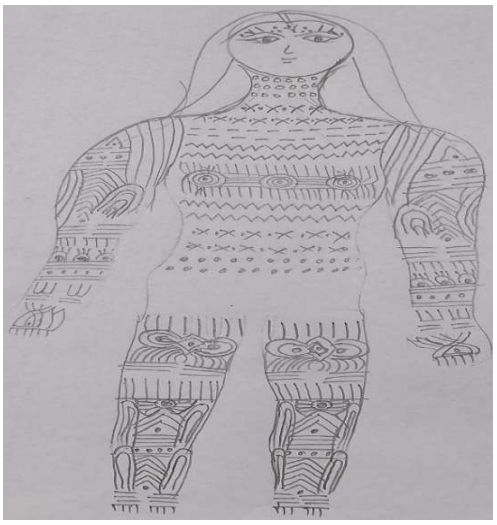

प्रकाशन

बैगा कर आरो

मध्य प्रदेश